**Program objective**

Philosophy is a process by which one can know the truth and reality about this world. Philosophy helps the student to achieve the aim of life. It also helps students to come out from depression, mental stress and hopelessness. After studying it one can reform himself by improving his thinking, vision and ideology in positive manner. One may become calm and settled in every condition of life as in pain. Sorrow, Pleasure, Wealth and in happiness. One can take strong decision on the ground of reality in every field. The different streams of this subject help student in developing a positive personality. Philosophy allows students to explore the human within. Philosophy gives Students a perspective, so that they may know who they are, what they value, what do they care for and what they stand for. It gives students the opportunity to know themselves.

**Program outcome**

1. After the completion of this course students may get various job opportunities in government, private and corporate sector.
2. By selecting this subject one can appear for Administrative Services and may get higher posts.
3. One can become professor, critique, motivator, yoga teacher, ethical counselor etc.
4. By passing the examination of NET and SLET student can get the opportunity for teaching in Universities and colleges.
5. They can make their career by doing research work for Ph.d and may appear for the exam for P.D.F. They can also appear for B.Ed and M.Ed education programmes.
6. This syllabus is also very helpful in the field of reasoning so that it helps students alot in their competitive exams.

Chairperson
B.O.S.

Mishra
Head
Philosophy
Arts. & Com.

कार्यक्रम का उद्द्देश्य

भारतीय परिप्रेक्ष्य में दर्शन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से इस जगत की वास्तविक सत्यता को जाना जा सकता है । यह जीवन जीने के लक्ष्य को निर्धारित करने में सहायता प्रदान करता है । निराशा, मानसिक तनाव, एवं नि:सहायता को दूर करने में बहुत सहायक सिद्ध होता है । दर्शन पढ़ने के बाद विद्यार्थी के व्यक्तित्व में तीव्र सुधार दिखाई देता है । वह सुख-दुख एवं प्रसन्नता एवं दर्द की स्थिति में भी प्रज्ञावान बना रहता है । इस विषय के अध्ययन के पश्चात वह हर स्थिति में यथार्थ के धरातल पर सशक्त निर्णय ले सकता है । इस विषय की विभिन्न धाराएं विद्यार्थी को एक सकारात्मक व्यक्तित्व में विकसित करती है । दर्शनशास्त्र विद्यार्थी को अपने अंदर मानवता को प्रदर्शित करती है । दर्शनशास्त्र विद्यार्थी को एक दृष्टि प्रदान करता है जिसके अंतर्गत वे जान सकते हैं कि वे कौन है ? वे किसे मूल्यवान समझते हैं ? वे किसकी परवाह करते हैं और वह किसके साथ खड़े हैं ? यह विद्यार्थी को स्वयं को समझने में मदद करता है ।

शिक्षण के परिणाम (प्रोग्राम आउटकम)

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी शासकीय, अशासकीय एवं कारपोरेट सेक्टर में विभिन्न अवसर प्राप्त कर सकेगा।
2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का चयन कर विद्यार्थी प्रशासकीय सेवा में उच्च पदों को प्राप्त कर सकेगा ।
3. विद्यार्थी प्राध्यापक, समीक्षक, प्रेरक वक्ता, योग प्रशिक्षक, नैतिक परामर्शदाता इत्यादि बन सकता है ।
4. नेट एवं सेलेट की परीक्षा के पश्चात विद्यार्थी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्यापक का अवसर प्राप्त कर सकता है ।
5. विद्यार्थी पी.एच.डी एवं पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप हेतु प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर शोध हेतु कार्य कर सकता है एवं वह बी.एड. एवं एम.एड. जैसे पाठ्यक्रमों में भी प्रवेश ले सकेगा।

6. यह पाठ्यक्रम तर्कबुद्धि परीक्षण हेतु लाभप्रद है जो विद्यार्थी को प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु सहायता प्रदान करेगा।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,
स्नातकोत्तर (M.A.) उपाधि पाठ्यक्रम

# Semester I[st]

**Subject** - दर्शनशास्त्र अंक ४०+६० = १००
**Title** - (Indian Epistemology) भारतीय ज्ञान मीमांसा
**Course** - **CCT-01/Phil-101**

**Course outcome - After the completion of this course the student may discriminate between right and wrong and may get the real meaning of knowledge. He will achieve the utility of knowledge in life.**

शिक्षण परिणाम – **इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात** विद्यार्थी **उचित एवं अनुचित में भेद कर सकेगा । वह ज्ञान का यथार्थ अर्थ समझेगा और जीवन में ज्ञान की उपयोगिता हेतु समझ प्राप्त कर सकेगा।**

इकाई – 1 :(अ) ज्ञान का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरुप
(ब) ज्ञान का वर्गीकरण, प्रभा एवं अप्रभा
(स) संशय, तर्क एवं भ्रम
(द) ख्यातिवाद, आत्मख्याति, असत् ख्याति, अन्यथा ख्याति, अनिर्वचनीय ख्याति, सत्ख्याति

इकाई – 2 : (अ) प्रामाण्य की परिभाषा एवं स्वरूप
(ब) प्रामाण्य का वर्गीकरण स्वत प्रामाण्य, परत प्रामाण्य
(स) प्रमाण का अर्थ एवं प्रकार, प्रमाण–व्यवस्था
(द) चार्वाक प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वरूप, अन्य प्रमाणों का खण्डन

इकाई – 3 : (अ) जैन दर्शन का नया विचार
(ब) अनेकरन्तवाद
(स) बौद्ध दर्शन का अपोहवाद
(द) न्याय एवं मीमांसा के अनुपात प्रत्यक्ष प्रमाण

इकाई – 4 : (अ) अनुमान का स्वरूप एवं प्रकार
(ब) व्याप्ति का स्वरूप एवं प्रकार
(स) हेत्थाभास
(द) उपमान

इकाई – 5 : (अ) शब्द प्रमाण का स्वरूप
(ब) अभिहितान्वयवाद एवं अन्तिामिधानवाद
(स) अथापत्ति
(द) अनुपलब्धि

Books :-
डॉ. संगमलाल पाण्डेय– ज्ञानमीमांसा के गूढ़ प्रश्न
डॉ. हरिशंकर उपाध्याय– ज्ञानमीमांसा के मूल प्रश्न
डॉ. हृदयनारायण मिश्र– भारतीय ज्ञानमीमांसा एवं तत्वमीमांसा
डॉ. चन्द्रधर शर्मा– भारतीय दर्शन
डॉ. राधाकृष्णन– भारतीय दर्शन भाग–१,२

# विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) उपाधि पाठ्यक्रम

## Semester I[st]

**Subject : Philosophy** अंक ४०+६० = १००

**Title : Western Epistemology**

**Course : CCT 02/Phil-102**

**Course outcome - After the completion of this course the student may understand different concepts and views established by western thinkers on knowledge and truth.**

**शिक्षण परिणाम – इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी पाश्चात्य दार्शनिकों के ज्ञान एवं सत्य संबंधी विभिन्न सिद्धान्तों एवं दृष्टिकोणों को समझ सकेगा ।**

**Unit - 1 :**

Belief and knowledge, nature of the concept/conceptual knowledge, dialectic (pre-Socratic philosophy up to Plato).

**Unit - 2 :**

Sources of knowledge, Cartesian method and criterion of knowledge, Nature of Innate Ideas (Modern period : Rationalism)

**Unit - 3 :**

Perception vs. Primary & Secondary Qualities, Refutation of Innate Ideas, and Limits of knowledge in Lockers Philosophy (Modern Period : Empiricism).

**Unit - 4 :**

Forms of Intuition and Categories of understanding, Types of Judgements, Possibility of Synthetic Judgment a priori (Kant).

**Unit - 5 :**

Theories of Truth : Self-Evidence, Corresponding, Coherence and Progmatism.

Recommended Books:-


डॉ. चन्द्रधर शर्मा– पाश्चात्य दर्शन

डॉ. याकूब मसीह– पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

डॉ. जगदीश सहाय श्रीवास्तव– पाश्चात्य दर्शन

# विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

## Semester I$^{st}$

अंक ४०+६० =१००

**Subject : Philosophy**

**Title : Western Logic**

**Course : CCT-03/Phil-103**

**Course outcome - Logic is most important in real life. Student can be perfect in argument by study of logic. He may get knowledge for real arguments and end his dilemma by the study of this course.**

**शिक्षण परिणाम – तर्कशक्ति यथार्थ जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। तर्कशक्ति के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी तर्क में पूर्ण हो सकता है। प्रस्तुत पाठ्यकम के द्वारा वह यथार्थ तर्क का ज्ञान प्राप्त कर सकेगा एवं अपने भ्रम को समाप्त कर सकेगा।**

**Unit - 1 :**

(1)Subject Matter of logic :

a. The nature of logic  b.Deductive & Inductive

c. Propositions  d. Truth and Validity

(2) Informal Fallacies :

a. Fallacies of Relevance b. Fallacies of Ambiguity

c. The Avoidance of Fallacies.

**Unit - 2 :**

(1) Categorical proposition :

a. Standard from Categorical proposition

b. Traditional square of Opposition

(2)Further Immediate Inferences :

a. Conversion b. Obversion c. Contraposition

**Unit - 3 :**

(1) Existential Import,

(2)Symbolism and Diagrams of Categorical Proposition

(3)Categorical Syllogism;

a.Standard from categorical syllogism,

b.The formal of syllogistic arguments,

c.Venn Diagram Technique for testing syllogism

d.Rules and Fallacies

**Unit – 4. :**

(1) Development of symbolic logic and its use.

(a) Simple and Compound Statements.

(b) Conjuction, Disconjunction, Negation

(c) Material Implication

**Unit - 5 :**

(1) Arguments Froms and Arguments

(a) Arguments froms and Truth - Tables

(b) Statements froms and statements

1. Tautology
2. Contradiction
3. Contingent

Books:-

- केदारनाथ तिवारी तर्कशास्त्र परिचय
- डॉ. बांकेलाल शर्मा तर्कशास्त्र प्रवेश
- डॉ. राजश्री अग्रवाल– तर्कशास्त्र का वैज्ञानिक स्वरूप
- डॉ. आलोक गोयल– तर्कशास्त्र मे प्रतीकों का महत्त्व

## विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

# Semester I$^{st}$

अंक ४०+६० = १००

**Subject : Philosophy**

**Title : Indian Ethics**

**Course : ECT-01 (i)/Phil-104**

**Course outcome - Ethics is most important for social life. Indian ethics gives student the capacity to transform himself into a good human being. This is very useful in every field of life. The student can able for social and political life and himself a good person.**

शिक्षण परिणाम – **नीति शास्त्र सामाजिक जीवन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय नीतिशास्त्र** विद्यार्थी **को स्वयं को रूपांतरित एवं श्रेष्ठ भाव में करने की क्षमता प्रदान करता है। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात** विद्यार्थी **अपने आपको सामाजिक, राजनीतिक जीवन में एक श्रेष्ठ व्यक्ति के योग्य बन सकेगा।**

इकाई – 1 :

भारतीय नीतिशास्त्र के सामान्य लक्षण, भारतीय नीतिशास्त्र का विकास ऋण एवं सत्य ऋण एवं यज्ञ, योग एवं क्षेत्र, पुरुषार्थ।

इकाई – 2 :

भगवद्गीता (निष्काम कर्मयोग) बौद्ध चिंतन में उपायकौशल (बुद्धयान) तथा ब्रहविहार (मैत्री, करूणा, मुदिता, उपेक्षा), जैन परम्परा में त्रिरत्न (दर्शन, ज्ञान एवं चरित्र)

इकाई – 3 :

योग दर्शन के अनुसार यम तथा नियम, विदुर नीति, कौटिल्य नीति

इकाई – 4 :

मीमांसा के अनुसार धर्म (विधि–निषेध, अर्थवाद), शास्त्रोपदेश, अपूर्व, साध्य–साधन, इतिकर्तव्यता, कर्म सिद्धान्त के नैतिक आपादन।

इकाई – 5 :

समकालीन भारतीय नीति शास्त्र, विवेकानन्द (सद्गुण), गांधी (एकादश व्रत), विनोबा (भूदान एवं वैश्विक नैतिकता)।

पुस्तक सुझाव–

- डॉ. बद्रीनाथ सिंह–नीतिशास्त्र
- डॉ. अशोक कुमार वर्मा– नीतिशास्त्र के सिद्धान्त
- डॉ. एस.के. मैत्रा–The Ethics of The Hindus
- डी डी बंदिष्टे - Indian Ethical Theories

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

# Semester II[nd]

**Subject-** **Philosophy** (दर्शनशास्त्र) अंक 40+60 = 100

**Title-** **Indian Metaphysics** (भारतीय तत्त्वमीमांसा)

**Course-** **Phil-201**

**Course outcome - By the study of this course students may get the fundamental Knowledge of Indian culture in philosophy and make get the knowledge of universe.**

शिक्षण परिणाम – **इस पाठ्यक्रम के अध्ययन** द्वारा विद्यार्थी **भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के आधारभूत ज्ञान को प्राप्त कर सकेगा एवं संपूर्ण ब्रह्मांड की जानकारी** प्राप्त कर सकेगा।

इकाई – 1 : (अ) वैदिक दर्शन का बहुदेववाद
(ब) औपनिषदिक परम्परा में ब्रह्म विचार
(स) गीता के अनुसार ज्ञानयोग, कर्मयोग एवं भक्तियोग विचार
(द) चार्वाक दर्शन में भौतिकवाद विचार

इकाई – 2 : (अ) जैन दर्शन का जीव–अजीव विचार
(ब) जैन दर्शन का बंधन एवं मोक्ष विचार
(स) बौद्ध दर्शन का अनात्मवाद विचार
(द) बौद्ध दर्शन का निर्वाण विचार

इकाई – 3 : (अ) सांख्य का सत्कार्यवाद
(ब) सांख्य का प्रकृति एवं पुरुष विचार
(स) सांख्य का विकासवाद
(द) पातन्जल दर्शन में चित्तवृति एवं अष्टांग योग विचार

इकाई – 4 : (अ) पदार्थ का स्वरूप एवं प्रकार (वैशेषिक दर्शन)
(ब) द्रव्य, गुण एवं कर्म विचार (वैशेषिक दर्शन)
(स) सामान्य विशेष, समवाय एवं अभाव विचार (वैशेषिक दर्शन)
(द) पूर्व मीमांसा का अपूर्व सिद्धांत

इकाई – 5 : (अ) शंकर दर्शन में ब्रह्मविचार
(ब) शंकर दर्शन में माया विचार
(स) शंकर दर्शन में मोक्ष विचार
(द) रामानुज के अनुसार शांकर के मायावाद की आलोचना

Books Recommended-


- History of Indian Philosophy: S.N. Dasgupta
- Indian Philosophy (Vol. I & II): S. Radhakrishnan
- भारतीय दर्शन – डॉ. चन्द्रधर शर्मा, भारतीय दर्शन भाग–१,२ –डॉ. राधाकृष्णन

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर **(M.A.)** दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

# Semester II[nd]

**Subject-** **Philosophy** (दर्शनशास्त्र) अंक 40+60 = 100

**Title-** **Western Metaphysics (पाश्चात्य तत्त्वमीमांसा)**

**Course** **Phil-202**

**Course outcome - This course will provide the knowledge about universe, nature and spirit. Students will enable to understand creation of world in metaphysical manner through Western concepts.**

शिक्षण परिणाम – **प्रस्तुत पाठ्यक्रम** विद्यार्थी **को ब्रह्मांड प्रकृति एवं आत्मा के विषय में ज्ञान प्रदान करेगा।** विद्यार्थी **तात्विक ढंग से पाश्चात्य** सिद्धान्तों **को समझने में सक्षम हो सकेंगे।**

**Unit - 1 :**
(1) Nature and Scope of metaphysics. (तत्त्वमीमांसा की प्रकृति एवं क्षेत्र)
(2) Metaphysics and Science(तत्त्वमीमांसा और विज्ञान)
(3) Metaphysics and Religion(तत्त्वमीमांसा और धर्म)
(4) Metaphysics and Mysticism (Plotonus)(तत्त्वमीमांसा और रहस्यवाद)

**Unit - 2 :**
(1) Characteristics of Ideas (Plato) (विज्ञानों की विशेषताएं)
(2) Ideas and Things (Plato)(विज्ञानों और वस्तु)
(3) Types of Causes (Aristotle)(कारणता के प्रकार , अरस्तु)
(4) Matter and Form (Aristotle) (द्रव्य और स्वरूप)

**Unit - 3 :**
(1) Dualism (Descartes) (द्वैतवाद)
(2) Pluralism (Leibniz)(बहुत्ववाद)
(3) Mind body problem and speculations (Interactionism, Parallelism, Preestablished Harmony). मन और शरीर की समस्या एवं आत्मा (क्रिया–प्रतिक्रियावाद, समानान्तरवाद, पूर्वस्थापित सामन्जस्य)

**Unit - 4 :**
(1) Subjective Idealism (Berkeley) आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद
(2) Agnosticism (Kant) अज्ञेयवाद
(3) Absolute Idealism (Hegal) निरपेक्ष प्रत्ययवाद

**Unit - 5 :**
(1) God as Unmoved Mover (Aristotle) ईश्वर गतिहीन चालक के रूप में (अप्रवर्तित प्रवर्तक)
(2) God as Efficient Cause (Descartes)
(3) God as Substance (Spinoza) द्रव्य के रूप में ईश्वर

## Books Recommended-


- डॉ. बद्रीनाथ सिंह– पाश्चात्य दर्शन
- याकूब मसीह– पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
- हृदयनारायण मिश्र– पाश्चात्य दर्शन

# विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर **(M.A.)** दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

## Semester II$^{nd}$

**Subject-** **Philosophy(दर्शनशास्त्र)** अंक 40+60 = 100

**Paper Title :** **Western Ethics**

**Course :** **Phil-203**

**Course outcome - Western Ethics gives the knowledge of concept of good, right and responsibility etc. and their uses in life to the students.**

शिक्षण परिणाम – **पाश्चात्य नीति शास्त्र प्रत्ययो शुभ, उचित एवं उत्तरदायित्व इत्यादि का ज्ञान एवं जीवन में अनेक प्रयोग का ज्ञान** विद्यार्थियों **को देता है।**

**Unit - 1 :**

(1) History of Western Ethics (पाश्चात्य नीतिशास्त्र का इतिहास)

(2) Nature of Western Ethics (पाश्चात्य नीतिशास्त्र की प्रकृति)

**Unit - 2 :Kant's Ethics(कान्ट का नीतिशास्त्र)**

(1) The concept of Good will (शुभ संकल्प की अवधारणा)

(2) The concept of Duty (कर्त्तव्य की अवधारणा)

(3) Categorical Imperative (निरपेक्ष आदेश)

(4) Autonomy of Will

(5) Evaluaiton(मूल्यांकन)

**Unit - 3 :** **Moore's Ethics(मूर का नीतिशास्त्र)**

(1) The subject Matter of Ethics (नीतिशास्त्र की विषय वस्तु)

(2) Concept of Good (शुभ की अवधारणा)

(3) Naturalistic Fallacy (प्राकृतिवादी दोष)

(4) Criticism of Hedonism (सुखवाद की समीक्षा)

**Unit - 4 :** **Meta Ethics(अधिनीतिशास्त्र)**

(1) Cognitive Theories (संज्ञानवादी सिद्धान्त)

(a) Neo - intutionism :(नव अन्तःप्रज्ञावाद)

(1) Fundamental Assumptions (मौलिक धारणा)

(2) Evaluation (मूल्यांकन)

(b) Ethical Naturalism (नैतिक प्रकृतिवाद)

(1) Fundamental Assumptions (मौलिक धारणा)

(2) Evaluation (मूल्यांकन)

**Unit - 5 :** **Non-Cognitive Theories** :(असंज्ञानवादी सिद्धान्त)

(A) Emotivism

(1) A. J. Ayer

(2) C. I. Stevenson

(b) Prescriptionism

(1) R. M. Hare (2) Nowel Smith

## Books Recommended-

- डॉ सुरेंद्र वर्मा . नीतिशास्त्र की समकालीन प्रवृतियां
- डॉ सुरेंद्र सिंह नेगी . नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता
- डॉ ह्रदय नारायण मिश्र . नीति शास्त्र

# विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

## Semester II[nd]

**Subject-** **Philosophy(दर्शनशास्त्र)** अंक 40+60 = 100

**Paper Title :** **Logic: Indian and Western**

**Course :** **Phil-204**

**Course outcome - This course will enable students to discriminate between Indian and western logic. They can understand the rules of judgement.**

शिक्षण परिणाम – **यह पाठ्यक्रम** विद्यार्थीयों **को भारतीय एवं पाश्चात्य तर्क शास्त्र के मध्य अंतर समझने में मदद करेगा। (** विद्यार्थी **)वे निर्णय के नियमों को समझने में सक्षम हो सकेंगे।**

| | | |
|---|---|---|
| **Unit - 1 :** | (1) | Nature of Indian Logic (भारतीय तर्कशास्त्र की प्रकृति) |
| | (2) | History of Indian Logic (भारतीय तर्कशास्त्र का इतिहास) |
| | (3) | Inductive and deductive Mothed (तर्कशास्त्र में आगमन एवं निगमन प्रणाली) |
| **Unit - 2** | (1) | Prma evam Aprama |
| | (2) | Praman and its Classification |
| | (3) | Vyapti and Hetvabhash |
| **Unit - 3** | **(1)** | Pramanyvaad and Apramanyavaad |
| | (2) | Khyativad and Type of Khyativad |
| | (3) | Arthvaad, abhihitanvayavada, anvitabhidhanavada |
| **Unit- 4** | (1) | Rule of thought, methods of mill,scintific Explanation |
| **Unit - 5** | (1) | hypothisis, dellemma, Defination. |

Books Recommended –

- केदारनाथ तिवारी - तर्कशास्त्र परिचय
- डॉक्टर बांकेलाल शर्मा - तर्कशास्त्र प्रवेश

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर *(M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि* पाठ्यक्रम

# Semester III[rd]

**Subject : Philosophy(दर्शनशास्त्र)** अंक 40+60 = 100

**Title :contemporary Western Philosophy /** समकालीन पाश्चात्य दर्शन

**Course : CCT-07/Phil-301**

**Course outcome - After the completion of this course students can get the different uses of Philosophy with language analysis in the perspective of western philosophy.**

शिक्षण परिणाम – **इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात पाश्चात्य दर्शन के अंतर्गत भाषाओं विश्लेषण के साथ दर्शन के विभिन्न उपयोगों का ज्ञान** विद्यार्थीयों **को होता है।**

| | |
|---|---|
| **Unit-1** | **G. E. Moore : The refutation of idealism, External and Internal relation** |
| इकाई–1 | जी .ई. मूर – प्रत्ययवाद का खण्डन, बाह्य और आंतरिक संबंध |
| **Unit -2** | **B. Russel - Knowledge by Acquaintance and knowledge by Description,** |
| इकाई–2 | **logical Atomism.**<br>बी. रसेल परिचयात्मक ज्ञान एवं वर्णनात्मक ज्ञान, तार्किक अनुवाद। |
| **Unit-3** | **Wittgenstein : Philosophical Analysis Language game** |
| इकाई–3 | विट्गेस्टाइन – दार्शनिक विश्लेषण, भाषायी खेल |
| **Unit-4** | **A. J. Ayer : Theory of verification, function of philosophy** |
| इकाई–4 | ए. जे. एयर – सत्यापन सिद्धान्त, दर्शन का कार्य |
| **Unit-5** | **Evolutions theory of Bergson : Phenomonology - Hussel** |
| इकाई–5 | बर्गसा का विकास सिद्धान्त, हुस्सैल का दृश्यप्रपत्र शास्त्र |

Books Recommended-

- डॉ. अर्जुन मिश्र– दर्शन की मूलधाराएं
- डॉ गायत्री सिन्हा– समकालीन विश्लेषणवादी दार्शनिक एक अनुशीलन
- डॉ सुरेंद्र वर्मा - समकालीन पाश्चात्य दर्शन
- डॉ रामनाथ शर्मा - समकालीन पाश्चात्य दर्शन

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

# Semester III[rd]

**Subject-** **Philosophy(दर्शनशास्त्र)** अंक 40+60 = 100

**Title :** **Philosophy of religion / धर्म दर्शन**

**Course :** **CCT-08/Phil-302**

Course outcome - Philosophy of religion gives a platform to every student to understand his faith, belief and spiritualism about religious practices and principles.

शिक्षण परिणाम – **धर्म दर्शन प्रत्येक** विद्यार्थी **को उसके अभ्यास एवं** सिद्धान्तों **के बारे में उसकी आस्था, विश्वास एवं आध्यात्मिकता हेतु एक धरातल प्रदान करता है ।**

**Unit-1** **Nature of Religion**

**Science Philosophy and Religion**

इकाई–1 धर्म का स्वरूप, विज्ञान, दर्शन और धर्म

**Unit -2** **Theories of the Origin of Religion.,Concept of God in Indian Philosophy.**

इकाई–2 धर्म की उत्पत्ति के सिद्धान्त, भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा

**Unit-3** **Religious Experience and Religious Consciousness**

**Arguments for the Existence of God.**

इकाई–3 धार्मिक अनुभव और धार्मिक चेतना, ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण

**Unit-4** **Arguments against the existence of God.Theism,**

**Pantheism,Panentheism.**

इकाई–4 ईश्वर के अस्तित्व के विपक्ष में तर्क – ईश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद, पुरुषोत्तमवाद

**Unit-5** **God, Men and World Interrelationship Secularism.**

इकाई–5 ईश्वर, मनुष्य, जगत अन्तःसम्बन्ध – धर्म निरपेक्षतावाद

**Suggested Books:-**


1) Bhagavandas : Essential Unity of All Religions, ( Bhatia Vidya Bhavan, Bombay)
2) S. Radhakrishnan: Eastern Religion and Western Thought.
3) Y. Masih: Comparative Study of Religions.
4) बी.एन. सिंह तुलनात्मक धर्मदर्शन
5) याकूब मसीही– तुलनात्मक धर्मदर्शन

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

# Semester III[rd]

**Subject :** **Philosophy(दर्शनशास्त्र)** अंक 40+60 = 100

**Title/ शीर्षक :** **Modern Indian Thought /** आधुनिक भारतीय चिंतक

**Course/पेपर :** **CCT-09/Phil-303**

**Course outcome - Contemporary Indian Thinkers clear the rational and logical meaning of philosophy to everybody. After the completion of this course students will get the knowledge of philosophy in applied manner.**

शिक्षण परिणाम – **समकालीन भारतीय चिंतक दर्शन के बौद्धिक एवं तार्किक अर्थ को सामान्य जन को स्पष्ट करते हैं । इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात** विद्यार्थी **दर्शन को व्यवहारिक ढंग से समझ सकेंगे।**

## Particulars/विवरण

**Unit-1** **Background of Modern Indian Philosophy**

**Main Characteristics**

इकाई–1 दर्शन की पृष्ठभूमि, मुख्य विशेषताएँ

**Unit -2** **Swami Ramkrishna Paramhansa - Self Realization Serva Dharm Samanvaya**

इकाई–2 स्वामी रामकृष्ण परमहंस – आत्म साक्षात्कार, सर्वधर्म समन्वय

**Unit-3** **Swami Vivekanand, Universal Religion Four kinds of yoga.**

इकाई–3 स्वामी विवेकानन्द – सार्वभौमधर्म, योग के चार प्रकार

**Unit-4** **Revindra Nath Tagore - Man and God, Religion of Man.**

इकाई–4 रविन्द्रनाथ टैगोर – मानव एवं ईश्वर, मानव धर्म

**Unit-5** **M. K. Gandhi, Truth & God, Non Violence, Satyagraha.**

इकाई–5 एम. के. गांधी – सत्य और ईश्वर, अहिंसा, सत्याग्रह

## Books Recommended-


1) Binay Gopal Ray : Contemporary Indian Philosophers, Allahabad, 1957.
2) Basantkumar Lal : Contemporary Indian Philosophy, Delhi 1999.
3) S. Radhakrishnan: An Idealist View of Life, London, George Allen & Unwin, 1957.
4) M.Iqbal: Reconstruction of Religious Thought in Islam, Lahore, Ashraf, 1.
5) B.R.Ambedkar: Writings and Speeches, vol.1, Bombay Education Dept. Govt. Of Maharashtra.
6) Bhikhu Parekh: Gandhi's Political Philosophy.

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

# Semester III[rd]

**Subject** : **Philosophy(दर्शनशास्त्र)** अंक 40+60 = 100

**Title /शीर्षक** : **Adwait Vedant/अद्वैत वेदान्त**

**Course/पेपर** : **ECT-03(i)/Phil-304**

**Course outcome - Adwait vedant reveals the nature of real knowledge. This course will enable students to recognise difference between Illusion and reality.**

शिक्षण परिणाम – **अद्वैत वेदांत ज्ञान के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराता है । यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को भ्रम एवं वास्तविकता के मध्य भेद को समझने योग्य बनाता है।**

## Particulars/विवरण

**Unit-1** **Feature and nature of Adhyasa, Kinds and Importance of Adhyasa, Adhyasa and Khyativada, Relevance of Adhyasa.**

इकाई–1 अध्यास का लक्षण एवं स्वरूप, अध्यास के प्रकार एवं महत्व, अध्यास एवं ख्यातिवाद, अध्यास की प्रासंगिकता

**Unit -2** **Chatuh Sutri, Athatao Brahma Jigyasa, Janmadyasyah Yatah**

इकाई–2 चतुःसूत्री अथातो ब्रह्मजिज्ञासा, जन्माद्यस्य यतः

**Unit-3** **Shastrayonityat, Tattu Samanvayat**

इकाई–3 शास्त्रयोनित्यात् तत्तु समन्यवयात्

**Unit-4** **Tarkapada**

**Refutation of Sankhya Concept, Refutation of Nyaya Vaisesika Concept**

इकाई–4 तर्कपाद – सांख्यगत् का खण्डन, न्याय वैशेषिक मत का खण्डन।

**Unit-5** **Refutation of Vigyanvada**

**Refutation of Jainism**

इकाई–5 विज्ञानवाद का खण्डन, जैनमत का खण्डन

## Books Recommended-


डॉ. अर्जुन मिश्र – अद्वैत वेदान्त

डॉ. राममूर्ती शर्मा– अद्वैत वेदान्त

आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणी– ब्रह्मसूत्रभाश्यम्

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

# Semester IV$^{th}$

**Subject** : **Philosophy**(दर्शनशास्त्र) अंक 40+60 = 100

**Title** : **Comparative Religion**/तुलनात्मक धर्म

**Course** : **CCT-10 / PHIL-401**

**Course outcome - Comparative Religion gives the knowledge of duties of real religion. This course gives the knowledge of similarity that no religion is bigger and lower than others. The aim of all religions is same.**

शिक्षण परिणाम – **तुलनात्मक धर्म दर्शन वास्तविक धर्म के कर्तव्यों का ज्ञान देता है । यह समानता का ज्ञान देता है । कोई भी धर्म छोटा या बड़ा नहीं होता है । सभी धर्मों का लक्ष्य एक ही है।**

**Unit- I**

**1. Human destiny**

**2. Ethics, ways of prayers, rituals.**

**Unit-II**

**3. Ramakrishna Paramhansa's views on the unity of all religions.**

**4. Brahmo Samaj's and Arya Samaj's views on Socio-religious context.**

**Unit-III**

**2) God ,World, Man**

**3) Life After Death (Escatalogy)**

**4) Evil and Sufferings.**

**Unit-IV**

**1) Bhakti, Faith, Prayer, Worship, Miracle.**

**2) Mysticism.**

**Unit-V**

**3) Incarnation: Avatarvada.**

**4) Verification, falsification, and religion.**

Books Recommended-


- डॉक्टर सागरमल जैन . धर्म का मार्ग
- डॉक्टर सागरमल जैन . अध्यात्मवाद और विज्ञान
- मानव की सेवा में विश्व के धर्म ृ डॉण एसण आरण भट्ट
- सांवरिया बिहारी लाल वर्मा . विश्व धर्म दर्शन

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

# Semester IV$^{th}$

**Subject** : **Philosophy**(दर्शनशास्त्र) अंक 40+60 = 100

**Title** :**Shreemad Bhagvat Geeta Darshan / श्रीमद् भगवतगीतादर्शन**

**Course** : **CCT-11 / PHIL-402**

**Course outcome - ShrimadBhagwat Geeta Darshan, the part of the Philosophy of Gita gives the knowledge of detachment from wordly desires and gives the knowledge how to be dutiful towards our self and follow Nishkam Karm Yog. This helps them to enhance their management skills.**

शिक्षण परिणाम – **श्रीमद भगवत गीता दर्शन का मार्ग** विद्यार्थीयों **को सांसारिक तृष्णाओं से असम्बन्धता एवं हम अपने प्रति निष्ठावान रहते हुए निष्काम कर्म योग का अनुसरण कैसे करें इसका ज्ञान प्रदान करता है । यह** विद्यार्थीयों **को उनकी प्रबंधन क्षमता विकसित करने में सहायता देता है।**

**Unit-1** **The Nature of Geetadarshan, Importance of Geeta's Philosophy in Present Time, Special Reference with Personality Development and Time Management, Main Subject of Geeta.**

इकाई–1 गीतादर्शन का स्वरूप, गीता दर्शन का वर्तमान समय में महत्व, व्यक्तित्व विचार एवं समय प्रबंधन के संबंध में गीता की मुख्य विषयवस्तु।

**Unit -2** **Tattava Mimansa, Gyan Mimansa, Karma Mimamsa, Bhakti Mimansa and Sristi Mimansa as describe in Geeta**

इकाई–2 गीता में वर्णित तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, कर्म मीमांसा, भक्ति मीमांसा एवं सृष्टि मीमांसा

**Unit-3** **Explanation of yoga according to Geeta, Synthesis of Pravertti and Nivriti**

इकाई–3 गीता के अनुसार योग की व्याख्या, प्रवृत्ति एवं निवृत्ति का समन्वय

**Unit-4** **Interpretation of Geeta by different Philosophy - Tilak, Gandhi**

इकाई–4 विभिन्न विद्वानों द्वारा गीता की व्याख्या – तिलक, गांधी

**Unit-5** **Shri Aurobindo, Dr. Radhakrishnan, Dr. Anni Besant**

इकाई–5 श्री अरविन्द, डॉ. राधाकृष्णन, डॉ. एनी बेसेन्ट

Books Recommended-

1. गीता प्रबंध – श्री अरविंद गीता
2. गीता माता – महात्मा गांधी
3. भगवत गीता रहस्य – श्री बीजी तिलक
4. गीता प्रवचन – संत विनोबा भावे
5. तत्व विवेचनी – श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार
6. गीता के अठ्ठारह अध्याय – श्रीमती कुसुम अस्थाना

# विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,

स्नातकोत्तर (M.A.) उपाधि पाठ्यक्रम

## Semester IV$^{th}$

**Subject-** **Philosophy** (दर्शनशास्त्र) अंक 40+60= 100

**Title-** राजनीतिक दर्शन **(Political Philosophy)**

**Course-** **CCT-12 / PHIL-403**

**Course outcome - Political philosophy helps in making political principles and concepts beneficial for society. After the study of this course students will enable to know about responsibilities and duties of political people.**

शिक्षण परिणाम –राजनीतिक दर्शन राजनीति के नियमों एवं सिद्धान्तों को नैतिक एवं समाजोपयोगी बनाने में सहायता करता है। राजनीतिज्ञ के दायित्वों एवं वास्तविक कत्तव्यों की सटीक जानकारी इस विषय को पढ़ने से प्राप्त होती है।

Unit-I Nature and Scope of Political Philosophy.

Unit-II Secularism—its nature, Secularism in India.

Unit-III Social Change: Nature, Relation to Social progress, Marx-Engles on social change, Gandhi on social change.

Unit-IV Political Ideals: Nature of Democracy and its different forms, direct and indirect democracy, liberal democracy, democracy as a political ideal

Unit-V Socialism: Utopian and Scientific, Anarchism.

Books Suggestion -

- Political Thought: C.L. Wayper
- Political Philosophy:An Introduction: W.T. Blackstone
- Political Philosophy:East and West: Krishna Roy
- Political Philosophy: V.P. Verma
- Essays in Social and Political Philosophy: Krishna Roy & Chhanda Gupta (eds.)

- Western Political Thought: Brian R. Nelson
- Western Political Thought: From Plato to Marx: Shefali Jha
- आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तक – डॉ. वी. पी. शर्मा

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला,
स्नातकोत्तर (M.A.) दर्शनशास्त्र की उपाधि पाठ्यक्रम

# Semester IV$^{th}$

**Subject : Philosophy(दर्शनशास्त्र)** अंक 40+60= 100

**Title/ शीर्षक : Avaidik Darshan / अवैदिक दर्शन**

**Course/पेपर : ECT-04/PHIL-404**

**Course outcome - By the study of this course students may realise that they are not atheist and non religious despite being Avaidik. This course will enhance logical and ethical understanding themselves.**

शिक्षण परिणाम – अवैदिक दर्शन के पढ़ने से विद्यार्थियों को समझ आता है कि वास्तव में अवैदिक होते हुए भी वे नास्तिक एवं अधार्मिक नहीं है। यह पाठ्यक्रम नैतिकता को बढ़ावा एवं तार्किक समझ को बढ़ाता है।

## Unit-I

Introduction Of Indian Philosophy, Division Of Indian Philosophy And Main Characters. Diffirent Between Avaidik And Vaidik Darshan,

## Unit-II

Metaphisics Of Ved And Upnishad, Devavaad, Gyan, Bhakti Aur Karm Marg.

## Unit-III

**Charvak Darshan-**

Praman Vichar, Deputation Of Anuman And Shabda Praman, Bhautikvad

## Unit-IV

**Jain Darshah**

Jeev-Ajeev, Bandhan-Moksha, Vastukam Anekam Dharmam, Anekantvad, Shyadvad, Nayvad.

## Unit-V

**Bauddha Darshan-**

(Four noble truth)-Four Arya Satya, Pratityasamutpad,Dvadashnidan, Nirvan,

(Eight fold path)-Ashtangic Marg, Kshanikvad, Nairatmvad, Bouddh Communities.

Books Suggestion -

- डॉ.शिव नारायण लाल श्रीवास्तव - दर्शन के मूल प्रश्न
- प्रोफेसर सुरेंद्र सिंह नेगी - भारतीय दर्शन
- डॉ.राम नाथ वर्मा - भारतीय दर्शन के मूल तत्व
- वेद प्रकाश वर्मा - दर्शन विवेचन